मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 5

MSK–008

स्नातकोत्तर कला उपाधि कार्यक्रम (संस्कृत)

(एम.एस.के.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2025

एम.एस.के.–008 : संस्कृत साहित्य : गद्य, पद्य एवं नाटक

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *(i) इस प्रश्न-पत्र में तीन खण्ड हैं।*

(ii) सभी खण्डों से प्रश्नों के उत्तर लिखना अनिवार्य है।

(iii) प्रत्येक खण्ड में निर्दिष्ट निर्देशानुसार ही उत्तर लिखिए।

(iv) सभी प्रश्नों के लिए निर्धारित अंक निर्दिष्ट हैं।

खण्ड—क

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं **तीन** की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : 3×10=30

(क) कामं दुग्धे, विप्रकर्षन्यलक्ष्मीं,

कीर्तिं सूते, दुर्हृदो निष्प्रलाति।

शुद्धां शान्तां भातरं मङ्गलानां

धेनुं धीरा सूनृतां वाचमाहुः॥

(ख) अशोकमर्थान्वितनामताशया गताञ्च

शख्यं गृह शोचिनोऽध्वगान्।

अमन्यतावन्तमिवैषः पल्लवैः

प्रतीष्टकामज्वलदस्रजालकम्॥

(ग) अमुष्य विद्या रसनाग्रनर्तकी त्रयीव नीतागं गुणेन विस्तरम्।

अगाहताष्टादशतां जिगीषया नवद्वयदवीपपृथग्जयश्रियाम्॥

(घ) जननीतिमुदितमनसा सततं सुस्वामिना कृतानन्दा।

सा नगरी नगतनया गौरीव मनोहरा भवति॥

खण्ड—ख

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

$4 \times 15 = 60$

(क) श्रीहर्ष के जीवनवृत्त और कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

(ख) 'नैषधीयचरितम्' (प्रथम सर्ग) में वर्णित राजा नल की विशेषताओं को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

(ग) महाश्वेता के व्यक्तित्व को विस्तार से लिखिए।

(घ) 'चम्पू' का अभिप्राय तथा चम्पूकाव्यों में नलचम्पू के स्थान की समीक्षा कीजिए।

(ङ) 'उत्तररामचरितम्' का कथासार विस्तारपूर्वक लिखिए।

खण्ड—ग

3. अधोलिखित में से किसी **एक** गद्यांश की व्याख्या कीजिए : 10

(क) उत्थाय च कृतप्रणामा सादरं स्वमयासनमुपाहरम्। उपविष्टस्य च बलादनिच्छतोऽपि प्रक्षाल्य चरणावुपमृज्योत्तरीयांशुकपल्लवेनाव्यवधानायां भूमावव तस्यान्तिके समुपाविशम्। अथ मुहूर्त्तमिव स्थित्वा किमपि विवक्षुरिव स तस्यां मन्समीपोपविष्टयां तरलिकायां चक्षुरपातयत्। अहं तु विदिताभिप्राया दृष्ट्यैव भगवन्व्यतिरिक्तेयमस्मच्छरीरात्, अशङ्क्तयभिधीयताम् इत्यवोचम्।

(ख) यस्मिंश्च राजनि जनितजनानन्दे नन्दयति भेदीनीम्, गीतेषु जातिसंकराः, तालेषु नानालयभङ्गः, नृत्येषु

विषमकरणप्रयोगाः, वाद्येषु दडकरप्रहाराः, पुण्यकर्मारम्भेषु प्रबन्धाः, सारिद्यूतेषु, पाशप्रयोगाः, पुष्पितकेतकीषु हस्तच्छेदाः, न्यग्रोधेषु पादकल्पनाः, कञ्चुकमण्डने नेत्रविकर्तनामि आसन, न प्रजासु।

× × × × ×